गर्मी में मजदूर औरत की गर्म चूत की चुदाई

“देसी विलेज भाभी सेक्स कहानी में पढ़ें कि
लॉकडाउन में नरेगा में काम करते हुए गर्मी में एक
भाभी मुझे मिली जिसकी चूत की गर्मी मौसम की गर्मी
से भी ज्यादा थी. …”

Story By: वीरेन (veeren)
Posted: Sunday, May 23rd, 2021
Categories: कोई मिल गया
Online version: गर्मी में मजदूर औरत की गर्म चूत की चुदाई

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

गर्मी में मजदूर औरत की गर्म चूत की चुदाई

देसी विलेज भाभी सेक्स कहानी में पढ़ें कि लॉकडाउन में नरेगा में काम करते हुए गर्मी में एक भाभी मुझे मिली जिसकी चूत की गर्मी मौसम की गर्मी से भी ज्यादा थी.

नमस्कार दोस्तो, मेरा नाम समीर है। मैं प्रयागराज के एक छोटे से गांव का रहने वाला हूं।

ये बात उस समय की है जब पिछले साल हमारे प्रधानमंत्री ने पूरे देश में लॉकडाउन की घोषणा कर दी थी और सभी अपने घरों में ही रहने लगे थे।
सारी दुनिया के काम काज ठप हो गये थे।

कुछ समय बाद गांव में नरेगा का काम शुरू हुआ। मैं और मेरे कुछ दोस्तों ने सोचा कि खाली बैठने से अच्छा है कि कुछ काम किया जाए और टाइम भी पास हो जायेगा।

तो हम लोग काम करने के लिए नरेगा में जाने लगे। वहां पर औरत व मर्द साथ में मजदूरी करते थे।
उस वक़्त मई का महीना था और गर्मी बहुत ज्यादा पड़ रही थी।

कुछ ही दिन हुए थे काम पर जाते हुए कि एक दिन काम करते वक़्त मुझे एक भाभी मिली। वो भी काम करने आया करती थी।
मैंने उसको देखा मगर ज्यादा ध्यान नहीं दिया।

एक दो बार उससे बोलचाल हुई तो उसने मेरा नाम पता पूछ लिया। फिर मुझे लगा कि जिज्ञासा वश पूछ लिया होगा। शायद इसने पहले कहीं मुझे देखा होगा।

मेरा ध्यान भाभी की ओर किसी दूसरे दिन गया।

अब सुनिये कि उस दिन क्या हुआ था।

उस दिन सब मज़दूर काम पर निकल रहे थे। धूप बहुत ज़्यादा थी।

सभी मजूदर सूर्य देवता को कोस रहे थे कि भगवान हम सबका तेल क्यों निकाल रहे हैं ? मैं भी जा रहा था लोगों के पीछे पीछे। गर्मी बहुत थी और मैं अपना गमछा घर पर भूल आया था।

तभी भाभी ने पीछे से आवाज दी- क्यों समीर जी, आपको गर्मी नहीं लग रही है क्या ?
मैं- अरे भाभी, मैं क्या पत्थर का बना हूं ? इन्सान ही हूं, लग रही है बहुत गर्मी।

भाभी- तो कुछ ओढ़ लेना था न रुमाल वगैरह ?
मैं- गमछा घर भूल आया भाभी।
वो बोली- अरे तो शादी कर लो, घर में घरवाली आ जायेगी तो इस तरह छोटी छोटी चीजों के लिए परेशान नहीं होना पड़ेगा।

मैंने सोचा कि भाभी चलती बात पर मजाक कर रही है ; मैंने कहा- हां, भाभी करूंगा। मगर अभी तो 2-3 साल के बाद करूंगा।
भाभी- 3 साल कैसे बर्दाश्त करोगे समीर बाबू ?

अब इस सवाल पर मेरा ध्यान भाभी ने खींचा ; मैं पलटा और पूछा- क्या भाभी ? इसमें क्या बर्दाश्त करना है ?
वो कातिल मुस्कान के साथ बोली- गर्मी समीर बाबू ! शरीर में भी तो गर्मी होती है। उसको कैसे तीन साल तक बर्दाश्त करोगे ?

भाभी के इस जवाब पर मेरे अंदर एक करंट से की लहर दौड़ गयी। मैंने सोचा नहीं था कि भाभी मजाक की आड़ में सेक्स की बात करेगी।

अब मैंने भी सोचा कि जब भाभी इतनी सेक्सी बातें करने के लिए तैयार है तो मैं क्यूं पीछे हटूं।

मैंने कहा- भाभी, आपको इतनी फिक्र हो रही है तो आप ही बताइये, आप ही कुछ करिये!
वो बोली- मैं क्या ए.सी. हूं जो तेरी गर्मी को ठंडा कर दूंगी?

फिर मैंने कहा- अरे भाभी, सभी औरतों के पास हर चीज का इलाज होता है। आपके पास भी तो मशीन होगी गर्मी को खींचने के लिए?
ये बात सुनकर अब भाभी के चेहरे पर कातिल स्माइल आ गयी।

इधर भाभी से इस तरह सेक्सी बातें करते हुए मेरा भी लंड तनने लगा था।
वो बोली- मगर गर्मी देख रहे हो समीर बाबू? इतनी गर्मी में तो खुद मेरी ही मशीन से तेल निकल रहा है।

मैं बोला- तो फिर हम दोनों की तो एक ही समस्या है। दोनों को ही गर्मी परेशान कर रही है। अब एक दूसरे की मदद हम ही कर सकते हैं भाभी!
भाभी गहरे कामुक स्वर में बोली- हां समीर बाबू, अगर ऐसी गर्मी में किसी मोटे रसीले गन्ने का रस मिल जाये तो मजा आ जाये।

इस पर मैंने कहा- अरे भाभी, इतनी सी बात? आज आपको गन्ने का रस जरूर मिलेगा। मैं काम के बाद खुद आपको मोटे रसीले गन्ने का रस पिलाऊंगा।

अब तक मेरे लंड से कामरस रिसने लगा था। भाभी के लिए भी मुझे पूरा यकीन था कि उसकी चूत भी मेरे लंड को लेने के बारे में सोचकर पनिया रही होगी।

हम लोग काम पर पहुंच गये और काम करने लगे।
एक घंटे तक हमने काम किया और फिर मेरे दोस्त को प्यास लग आयी। वो पानी पीने के

लिए चला गया।

पसीना अधिक निकल जाने के कारण मेरा गला भी सूखा जा रहा था। दोस्त के आते ही मैं भी पानी पीने के लिए चला गया. वहां नलकूप के पास भाभी मुझे मिल गयी।

मुझे देखकर बोली- समीर बाबू, आप तो पसीना-पसीना हो रहे हो।
मैंने कहा- हां भाभी, गर्मी ही इतनी ज्यादा है। मैंने तो कहा था कि आपके पास मशीन होगी, वही मेरे बदन की गर्मी को निकाल सकती है।

मैंने भाभी की आंखों में आंखें डाल ली थीं और वो भी जैसे आंखों में ही कहने को तैयार थी कि मिल लो, निकाल दूंगी गर्मी।
फिर भाभी ने कह ही दिया- अगर आप मुझसे ही अपनी गर्मी निकलवाना चाहते हैं तो ठीक है। काम खत्म होने के बाद उस पेड़ के नीचे मिलियेगा, फिर आपकी गर्मी को शांत करने की कोशिश करूंगी।

इतना कहकर भाभी चली गयी।

मेरा लंड तो खड़ा हो चुका था। भाभी साफ साफ चुदाई का आमंत्रण दे रही थी। अब मैं भी ठान चुका था कि इसकी चूत को खूब चोदूंगा और इसकी तथा अपनी प्यास को अच्छे से बुझा दूंगा।

दो घंटे के बाद छुट्टी हुई तो मैंने अपने दोस्त को फावड़ा दिया और उसको बोला कि तू चल मैं लैट्रिन जाकर आता हूं।
मैंने हाथ में पानी की बोतल ली और वहीं उस पेड़ के नीचे गया जहां भाभी ने इशारा किया था। वो बरगद का पेड़ था और काफी घना था।

उस पेड़ का तना इतना इतना मोटा था कि दो लोग बराबर बराबर भी खड़े हो जायें तो दूर

से किसी को पता भी न चले कि पेड़ के पीछे कोई खड़ा भी है या नहीं।

मैं पेड़ के पास जाकर भाभी के आने का इंतजार करने लगा।

पांच मिनट के बाद भाभी आ पहुंची। उसने यहां वहां देखा और फिर पेड़ के पीछे चली गयी।

फिर वहां से झांक कर मुझे भी पेड़ के पीछे आने का इशारा किया। पेड़ हमारे काम करने की जगह से काफी दूरी पर था। जिस तरफ हम पेड़ के पीछे खड़े थे वहां की साइड में दूर दूर तक वीराना था।

वैसे भी गर्मियों के दिन थे और दोपहरी के समय में इन्सान तो क्या जानवर या पंछी भी बाहर नहीं नजर आते हैं।
भाभी बोली- तुम तो पानी भी लाये हो! लैट्रिन जाना है क्या?
मैंने कहा- भाभी आपको जाना है तो आप चली जाइये।

वो बोली- चलो साथ में ही हग लेते हैं। मजा आयेगा।
मैं भी उसकी गंदी बातें सुनकर रोमांचित हो रहा था।
वो साड़ी उठाकर बैठ गयी और फिर मुझे देखने लगी।

भाभी बोली- उतार ना राजा पैंट … देख क्या रहा है, जल्दी से उतार कर हग कर दिखा।
मैंने पैंट उतारी और वहीं भाभी के पास उनके हाथ पकड़ कर बैठ गया।

हम दोनों हगने लगे।
भाभी पाद मार रही थी।

मैंने कहा- क्या बात है भाभी, बहुत आवाजें कर रही हो?

वो बोली- तुझे अच्छा नहीं लग रहा क्या मेरा पादना ?
मैंने कहा- मजा आ रहा है।

फिर वो पादती रही और हगती रही। मेरा भी पेशाब आ रहा था। लंड भी खड़ा था।

भाभी की चूत सामने थी जिसमें से मूत की धार रह रहकर गिर रही थी।

मेरे लंड से भी मूत निकलने लगा और मैंने हाथ का सहारा देकर लंड को भाभी की चूत के निशाने पर लगा दिया।
मूत की गर्म धार सीधी भाभी की चूत पर जाकर लगने लगी।

गर्म मूत की धार से भाभी की चूत और ज्यादा गर्म होने लगी और उसने अपनी टांगें और चौड़ी करके चूत को फैलाकर मेरे मूत की धार के और अधिक सामने कर दिया।

भाभी अपनी चूत को मेरे मूत में नहलवा रही थी। ये नजारा देखकर मेरे लंड में इतना तनाव आ गया कि लंड से मूत निकलना ही बंद हो गया।
लंड में झटके लगने लगे।

गर्म चूत पर मूत गिरना बंद हुआ तो भाभी के चेहरे पर शिकन आ गयी, उसका मजा खराब हो गया।

मैंने कहा- भाभी, आपकी चूत देखकर अब रुका नहीं जा रहा। देखो क्या हाल हो रहा है लंड का। ये पगला गया है। एक बार इसको अपनी चूत में शरण दे दो फिर ये आपकी चूत को ऐसा नहलायेगा कि आप सब कुछ भूल जाओगी।

भाभी हंस दी और फिर हम दोनों ही हंसने लगे।
भाभी की गांड के नीचे लैट्रिन का ढेर हो गया था। भाभी ने मेरी लैट्रिन को देखा और फिर

हम हंसने लगे।

फिर हम दोनों उठे। भाभी ने मेरी गांड धोयी और मैंने भाभी की गांड धोयी। जब भाभी के कोमल हाथ मेरी गांड धो रहे थे तो मन किया कि और हग दूं उनके हाथ पर।

विलेज भाभी की गांड धोते हुए मैं उनकी गांड में उंगली देना चाहता था लेकिन भाभी ने ज्यादा मौका नहीं दिया।
फिर हम लोग उठ गये।

उसके बाद हमने यहां वहां देखा। नरेगा वाले सब लोग जा चुके थे। हम पेड़ के पीछे गये और लिपटम-लिपटा हो गये।

भाभी के पसीने की खुशबू मुझे पागल कर रही थी। वो भी मेरे पसीने को मेरी छाती में नाक लगाकर सूंघ रही थी। कभी हम दोनों एक दूसरे के होंठ चूसते और कभी गर्दन और छाती में मुंह लगाकर चाटने लगते।

भाभी का नमकीन पसीना चूसकर मेरे लंड में उफान मचा हुआ था। बार बार भाभी की गंदी सी साड़ी में उनकी जांघों के बीच में लंड को चूत में घुसाने का प्रयास कर रहा था।

जब रुका न गया तो मैंने उसकी साड़ी उठा दी और उसकी कच्छी के ऊपर से ही अपनी पैंट में तने लंड को रगड़ने लगा। मगर इतने से भी सब्र न हुआ तो मैंने अपनी पैंट भी खोलकर नीचे गिरा दी और फिर अंडरवियर में बने तंबू को भाभी की कच्छी में दबाने लगा।

भाभी भी अपनी चूत को मेरे अंडरवियर में उबल रहे लंड पर रगड़वा कर मजा ले रही थी। मेरे हाथ जोर जोर से भाभी की चूचियों को ब्लाउज के ऊपर मसल रहे थे।

उसकी साड़ी का पल्लू नीचे गिर चुका था और वो पेट पर से भी नंगी हो चुकी थी। मैंने

उसकी नाभि को चूमा और चूत को जोर से अपनी हथेली से रगड़ दिया। फिर उसके हाथ पेड़ के तने पर दबाकर कर उसकी पैंटी को चूसने चाटने लगा।

भाभी ने कुछ देर पहले ही गांड धोयी थी और पानी लगने से भाभी की चूत गीली हो चुकी थी। मैंने पैंटी उतारी और उसकी गीली चूत चूसने लगा।
काले-काले बड़े-बड़े बालों वाली फूली हुई चूत के झांटों में बहुत पानी भरा हुआ था।

उस पानी को मैं पूरा चूस-चाट गया। मेरी उत्तेजना मुझसे संभाले नहीं संभल रही थी।

मैंने चूत में जीभ देकर चाटा तो भाभी ने गांड पेड़ से सटा दी और चूत खोलकर अंदर तक जीभ डलवाने लगी।

मैं भी भूखे कुत्ते की तरह भाभी की चूत को खाने में लगा था। भाभी मेरे सिर को ऐसे अपनी चूत में दबा रही थी जैसे मुझे सिर समेत अंदर ही डाल लेगी।

भाभी की चूत से पेशाब का स्वाद भी आ रहा था और उसके मजे में मैं उसकी चूत को और ज्यादा शिद्दत से चाट रहा था।

अब भाभी सिसिया गयी- आह्ह … राजा … लौड़ा डाल दे … पेल दे ना … हरामी … अब नहीं रहा जाता।

मैंने भाभी की चूत से जीभ निकाली और उठने से पहले उसकी झांटों से भरी चूत के होंठ को दांतों काट दिया।
इस पर भाभी ने मेरे सिर के बाल जोर से खींचते हुए मेरे मुंह को अपनी चूत में घुसवा लिया।

अब मैं उठा और भाभी को पेड़ के तने से चिपका कर उसके होंठों का रस पीते हुए उसकी

चूत में लंड को लगाने लगा।
भाभी से पल भर का भी इंतजार न हुआ और उसने मेरे लौड़े को पकड़ कर चूत पर सटवा लिया और खुद ही टांग उठाकर मेरा लंड चूत में ले लिया।

भाभी की चूत चुदाई की मशीन चालू हो गयी।
मैं तेजी से भाभी को पेलने लगा.

तभी मेरे दोस्त ने दूर से आवाज दी।
हम दोनों हड़बड़ाये और मैंने पेड़ के पीछे से झांक कर देखा।

दूर खड़ा हुआ मेरा दोस्त मुझे हाथ हिलाकर बुला रहा था।
मेरा दिमाग खराब हो गया। ये साला कवाब में हड्डी अभी तक मेरा इंतजार कर रहा था?
मैं मन ही मन कोसने लगा कि साला क्या मेरी टट्टी खाने के लिए रुका हुआ था अभी तक! भोसड़ी वाला … चूत का मजा खराब कर दिया।

भाभी ने मुझे अपने पास पकड़ कर खींच लिया और फिर से मेरे तने हुए लौड़े को चूत में लेकर मेरी गांड को अपने हाथों से दबाते हुए आगे पीछे करके चुदवाने लगी।

इतने में ही दोस्त ने फिर से आवाज लगाई।
मैंने कहा- भाभी, ये साला अब जीने नहीं देगा। मजा नहीं आ रहा।
भाभी बोली- चलो ठीक है, देर शाम को मेरे घर आ जाना, पति दारू के नशे में पड़ा रहता है। तुम चुपके से आकर चोद जाना। मगर देर न करना। मैं रह नहीं पाऊंगी।

फिर हम दोनों ने कपड़े ठीक किये। मैं पहने निकल गया और दोस्त को लेकर वहां से चला गया। भाभी बाद में अपने घर पहुंच गयी।
किसी तरह से मैंने चार पांच घंटे का समय काटा और रात 8 बजे के करीब भाभी के घर के

पास पहुंच गया।

इत्तेफाक से भाभी छत पर काम करते हुए घूम रही थी। उसने मुझे देख लिया और सीधा अंदर आने का इशारा किया।
जब तक मैं भीतर गया, भाभी मुझे लेने नीचे आ गयी थी।

उसने कान में फुसफुसाकर कहा- वो बेवड़ा अंदर कमरे में पड़ा है। तू ऊपर चल!

मैं ऊपर जाने लगा और भाभी ने अपने पति के कमरे का दरवाजा धीरे से ढाल दिया।

दो मिनट बाद वो भी ऊपर आ गयी। वो मुझे अंदर वाले रूम में ले गयी और जाते ही हम दोनों लिपटने लगे।

विलेज भाभी बोली- जल्दी कर ले, चोद दे मुझे फटाफट। किसी को पता न चले।

मैंने भाभी की साड़ी उठाई और चड्डी नीचे कर दी। मैंने उसकी चूत को हथेली से रगड़ा और वो सिसकार उठी।
वो बोली- चोद ले हरामी, ये नौटंकी फिर कभी कर लेना।

मैंने पैंट खोलकर अंडरवियर नीचे किया और अपना तना हुआ लंड भाभी की चूत में घुसा कर उसे दीवार से सटा दिया।
वो मेरे कंधों से लिपटते हुए मेरी गर्दन को चूमने लगी और मैं दीवार की ओर भाभी की चूत में धक्के देने लगा।

भाभी की चूत बहुत गर्म थी। चूत काफी बड़ी और ढीली थी मगर चोदने में फिर भी बहुत मजा आ रहा था।
मुझे भी बहुत दिन के बाद चूत मिली थी। भाभी की चूत को लंड मिला तो वो आनंद में

बहने लगी।

उसने एक टांग उठाकर मेरी नंगी गांड पर लपेट दी और कसकर चुदवाने लगी।
मैं भी पूरी गति से पेलने लगा।

फिर मैंने उसको नीचे फर्श पर पटका और उसकी गांड को अपनी ओर खींचते हुए उसको घोड़ी बना लिया।

मैं घुटनों के बल हो गया और उसके ऊपर चढ़कर चूत में पीछे से लंड पेल दिया। भाभी की कमर को थामकर मैंने उसकी चूत की चुदाई चालू कर दी।

अब भाभी मजे में सिसकारने लगी- आह्ह … राजा … अब लग रहा है कि चूत में कुछ जा रहा है … आह्ह चोद … मेरे राजा … आह्ह … बजा दे इसका बाजा।

मेरे धक्कों से कमरे में फट-फट की आवाज आने लगी।
मैंने हांफते हुए पूछा- तेरा मर्द तो उठ नहीं जायेगा?
वो बोली- तू जाकर उसकी गांड भी मारने लगेगा ना तो भी नहीं उठेगा। बहुत बड़ा बेवड़ा है साला। तू चोद … बस चोदता रह … आह्ह … तेरे लंड को छोड़ूंगी नहीं मैं।

अब मैंने पूरे जोश में धक्के लगाने शुरू कर दिया।
दस मिनट तक मैंने भाभी को बुरी तरह से पेला और फिर उसकी चूत में माल निकालते हुए उसके ऊपर ढेर हो गया.

हम दोनों हांफने लगे। मगर मजा आ गया। भाभी भी मुस्करा रही थी।

फिर हमने जल्दी से अपने कपड़े ठीक किये और मैं वहां से चुपके से निकल आया।

उस दिन के बाद तो रोज ही भाभी मुझसे चुदवाने लगी। अभी भी मौका पाते ही मैं उसको

चोदने पहुंच जाता हूं।
दोस्तो, आपको देसी विलेज भाभी सेक्स कहानी कैसी लगी मुझे अपने कमेंट्स में जरूर बताना।

आप मुझे नीचे दी गयी ई-मेल आईडी पर भी मैसेज कर सकते हैं।
धन्यवाद।
मेरी ई-मेल आईडी है veerens2559@gmail.com

Other stories you may be interested in

दोस्त की बीवी से दूसरी शादी करके चुदाई

वाइफ एक्सचेंज सेक्स कहानी में पढ़ें कि मेरे पति के दोस्त की बीवी प्रेगनेन्ट नहीं हो पा रही थी. मैंने अपने पति को उसकी चुदाई करके उसे बच्चा देने को कहा. यह कहानी सुनें. दोस्तो, मेरा नाम अरिश्का है, मैं […]
Full Story >>>

सुबह की सैर पर मिली कुंवारी लड़की

वर्जिन Xxx कहानी मेरे पहले सेक्स की है. मोर्निंग वाक़ के समय मेरी दोस्ती एक लड़की से हो गयी. कुछ दिनों में ही हम चूमाचाटी और ओरल सेक्स तक पहुंच गये. दोस्तो, मेरा नाम जय है और मैं गुजरात के […]
Full Story >>>

अस्पताल में मदद की तो मिली मस्त चूत

गर्म भाभी Xxx कहानी में पढ़ें कि मेडिकल कॉलेज क्लिनिक में मैंने एक भाभी की मदद की. वो दोबारा आई तो मुझसे मिली. उनसे दोस्ती हो गयी जो आगे सेक्स तक पहुंची. मेरा नाम राज गोहेल है. मैं अहमदाबाद में […]
Full Story >>>

मुझे अपनी चुत गांड चुदवाने को लंड चाहिए- 4

मेरी सेक्स चुदाई कहानी में पढ़ें कि मैं एक डॉक्टर के साथ काम करने लगी. वहां पर मैंने बीसियों लंड अपनी चूत में डलवाए. डॉक्टर ने भी मुझे चोदा. नमस्ते दोस्तो, मैं अरुणिमा एक बार फिर से चुदाई की कहानी […]
Full Story >>>

मुझे अपनी चुत गांड चुदवाने को लंड चाहिए- 3

लेडीज़ टेलर सेक्स कहानी में पढ़ें कि मुझे अपना सूट जल्दी सिलवाना था. मैं दर्जी की दूकान पर गयी तो अपना काम जल्दी कराने के बदले चुद गयी. हैलो साथियो, मैं आपकी अरुणिमा फिर से आपको अपनी चुत चुदाई की […]
Full Story >>>